शोध पत्र- हिन्दी

राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में डॉ. हरिवंशराय बच्चन के काव्य का अनुशीलन

* पूनम वंसत मानकर

* बी,-६ सिल्व्हर ऑयकॉन स्वावलंबी नगर, गोरक्षण रोड़, अकोला, महाराष्ट्र

July,2013

भारत का विशाल रूप हमारे गौरव एवं श्रद्धा का विषय है, यद्यपि, 'एकोऽहं बहुस्याम' इसकी सबसे बडी विशेषता है, आज वैश्वीकरण के इस युग में विघटनकारी प्रवृत्तियॉ सिर उठा रही हैं। राजनीति 'मत' से लेकर 'पद प्राप्ति' तक सीमित हो गयी है । राष्ट्रीयता की भावनाएँ कृषतर होती जा रही हैं ।

भारतीय दृष्टिकोण से यजुर्वेद में 'राष्ट्र में देहि' तथा 'राष्ट्रदा राष्ट्रम्मेदत्त'[1] शतपथ ब्राह्मण में समृद्धियुक्त ओजस्वी जनसमूह को[2] एतदर्थ भाषा, भूमि, जनसमुदाय आदि विभिन्न अर्थो में राष्ट्र शब्द प्रयुक्त हुआ है। पाश्चात्य दृष्टिकोणानुसार नेशन (Nation) शब्द लैटिन भाषा के नेश्यो (Natio) से उद्भूत है जिसका अर्थ है जन्म अथवा प्रजाति[3] प्रो.बर्गिस, प्रो.रेनन इ. विद्वानों के मतानुसार यह स्पष्ट होता है कि किसी भौगोलिक इकाई पर बसा हुआ समुदाय जिसकी अपनी सभ्यता,संस्कृति, भाषा, धर्म और परम्परा हो तथा जिसकी अपनी राजनीतिक एकता और कानून हो, वही राष्ट्र हैं ।

jk"Vªh; rk %

भारत के इतिहास में सर्वप्रथम वेदों में राष्ट्रीयता के दर्शन होते हैं।–अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त तथा ऋग्वेद में प्रयुक्त सूक्त हमें एक साथ चलने, एक भाषा प्रयोग तथा एकसूत्रता का संदेश देते हैं । पाश्चात्य विद्वानों ने राष्ट्रीयता का संबंध मनोवैज्ञानिक तथ्य से स्थापित करते हुए भाषा, धर्म परंपराओं एवं साहचर्य–भावना अर्थात मानसिक भावनाओं की एकता पर बल दिया गया है। भारतीय राजनीति शास्त्र के विद्वानों ने राष्ट्रीयता के अन्तर्गत निम्न तत्व स्वीकृत किए हैं –

1) भौगोलिक एकता, 2) जातीय एकता, 3) सांस्कृतिक ऐतिहासिक परम्परा की एकता, 4) भाषा की एकता, 5) धर्म की एकता, 6) आर्थिक हिंतो की एकता, 7) राजनीतिक एकता ।

jk"Vªh; rk vkj lkfgR; esa lEc/k %

विश्व में राष्ट्रीय भावना का साहित्य से अत्यंत प्राचीन संबंध रहा है । साहित्य समाज का दर्पण है यह उक्ति सर्वविदित है ही पर साहित्य समाज का पथ–प्रदर्शक भी है । जब राष्ट्रीयता की भावनाएँ प्रायः विलुप्त सी होती जाती हैं उस समय उसे जागृत करना साहित्य का ही कार्य होता है । लगभग 1500 ई. के अनन्तर सभी देशों के साहित्य में इस भावना ने प्रमुखता प्राप्त की। हिंदी साहित्य में आरंभ से ही राष्ट्रीयता की भावना देखी जा सकती है । वीरगाथाकालीन राष्ट्रीय भावना में जातीयता का भाव प्रमुख है। रासो परंपरा में वीरभाव का प्राधान्य है, वीरगाथाकाल के अवसान काल तक हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों के संगम से, राष्ट्रीयता का अभ्युदय हुआ। संत साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वरूप सामाजिक उत्थान का विशिष्ट परिचायक रहा है । कबीर, सूर, तुलसी का इस काल में विशेष महत्त्व है । रीतिकालीन साहित्य में भूषण एवं सूदन जैसे राष्ट्रवादी कवियोंने जनमानस को जागृत कर उनमें बल स्फूर्ति और ओज भर दिया ।

वास्तव में हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की गतिशील एवं अबाध धारा भारतेन्दु युग से आरंभ होती है । तत्कालीन प्रमुखपत्र 'हरिशचन्द्र–चन्द्रिका' की फाइलें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।[4] द्विवेदी युग का इतिहास तो इससे ओतप्रोत है । अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शंकर इस युग के प्रसिद्ध कवि हैं । छायावादी काव्य में पंत, प्रसाद निराला, महादेवी वर्मा, डॉ.रामकुमार वर्मा की राष्ट्रीय रचनाएँ प्रेरणादायी एवं ग्राह्य बन पडी हैं ।

cPpu dh jk"Vªh; dkO; dh i"BÒfe %

कवि अपने युग का प्रतिनिधि होता है । उसके कृतित्व में सारा युग प्रतिबिम्बत होता है। 'कवि मानवता का वह चेतन–यंत्र है जिस पर प्रत्येक भावना अपनी तरंग उत्पन्न करती है; जैसे भूकंप मापक यंत्र में पृथ्वी के अंग में कही भी उठने वाली सिहरन अपने आप अंकित हो जाती है।[5]

बच्चन ने जब साहित्य जगत में पदार्पण किया,उस समय भारत में राजनैतिक हलचल तीव्र थी, अंग्रेजों का दमन चक्र चल रहा था। 1930 में स्वराज्य की मॉग को लेकर बापू की प्रसिद्ध दांडी यात्रा से सविनय भंग का युद्ध प्रारंभ हो चुका था। बच्चन उस समय ए.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण हो चुके थे किन्तु पारिवारिक तथा आर्थिक चिंताओं और तात्कालीन राजनैतिक हलचलों के कारण कवि ने पढाई छोडकर चर्खा चलाने, सभा जूलूसों में जाने, नारे लगाने का काम ही नहीं, गांवों में जाकर व्याख्यान भी देने लगे। खद्दर प्रचारक टीम बना खादी का प्रचार करने लगे। कवि ने जूलूसों में गाने के लिए कई राष्ट्रीय गीत भी लिखे। जिनमें 'सर जाए तो जाए पर हिंद आजादी पाए'[6] वाला गीत बहुत प्रसिद्ध हुआ। कवि के मन में आर्य समाज के 'अछूतोद्धार' और गांधीजी के 'हरिजन आंदोलन' के संस्कार पड चुके थे। परिणामतः अछूतों की पंगत में बैठे बच्चन ने कच्चा खाना खाया,[7] अपने स्वतंत्र घर में चमार बावर्ची रखने लगे इतना ही नहीं 'बहिष्कृत परिवार'[8] में भोजन कर परिवार उद्धार का भी कार्य किया। बच्चन के मन–मस्तिष्क पर द्वारिका प्रसाद का 'असहयोगी फाग'[9] मैथिलीषरण गुप्तजी का भारत–भारती[10] पंत निराला के मुक्त छंदोंके साथ 'यंग इंडिया' 'नवजीवन'[11] पत्रिकाओं का प्रभाव

भी पडा था। स्वयं लेखक के शब्दों में ''मैं कलम और बंदूक चलाता हूँ दोनों''[12] यही संस्कार प्रभाव विकसित होकर विशद रूपमें उनके साहित्य में सूत की तरह बँट गए और राज्यसभा के मनोनीत सदस्य होने के बाद बच्चन का काव्य एक खास अदा और स्वरों के साथ अवतरित होने लगा।

cPpu dk dkO; esa jk"Vªh;rk dk fofoÙk :i vorfjr gq, gSa ¼**Findings**½

jk"Vªfirk ckiq ls lacaf/kr & गांधीजी के विलायत प्रस्थान पर 'भारत माता की बिदा'[13] तथा गांधीजी के जन्मदिन पर 'भारत माता की बधाई'[14] कविताओं में बापू के प्रति श्रद्धा 'खादी के फूल' और 'सूत की माला' में प्रतिफलित हुई है। यद्यपि इस में 'गुप्ताजी जैसा न इतिवृत्त वैशिष्ट्य है, न 'पंतजी' के काव्य जैसा लोकमंगलत्व न 'निराला' जी के काव्य जैसा उदात्त तत्त्व है, और न 'दिनकर' के काव्य जैसा दबता उभरता ओज तत्त्व है तथापि गांधीजी के महाप्रयाण पर आस्था की श्रद्धांजलियाँ गरिमामय बन पडी हैं।[15]

> vouh x©jo ls vfdr gq¨ uÒ dk y;[¨]
> D;k fy, norkv¨a us gh ;'k dk Bsdk]
> vorkj Loxl dk gh iFoh us tkuk g]
> iFoh dk vH;RFkku Loxl Òh r¨ ns[¨A[16]

Lokrk«; lqj{kk ls lacaf/kr & कवि को महाभारत के कृष्ण का रूप ही अधिक भाता है, जो लडने मरने का संदेश देता है। जिसे विश्वास है कि अंतिम विजय धर्म की ही होती है। अस्तु–'उतिष्ठ युध्वस्व भारत।'[17] यद्यपि बच्चन शक्ति प्रयोग में आस्था रखते हैं तथापि उसमें विवेक और मर्यादा सर्वत्र इलकती है। वह स्वातन्त्र्यसुरक्षा के लिए अनेक बार कहते हैं –

> ^gYdk Qqy ugÈ vktknh og gS Òkjh ftEesnkjh
> mls mBkus d¨ d/k¨a dk Òqtnu¨a dk cy r¨y¨*[18]

'बंगाल का काल', धार के इधर उधर' रूप और आवाज, बहुत दिन बीते की कतिपय कविताओं में यह भाव व्यंजित है। लाठी को राष्ट्रीय हथियार माननेवाले बच्चनजी ने 'लाठी और बांसुरी'[19] गान में भी उसकी महत्ता को अंकित किया है।

Òkjrh; lLÑfr dk Ápfr J)k & देश अपनी संस्कृति पर ही जीवित रहता है। अपनी संस्कृति को पुनः पुन याद करवाने पर भी देश को जागृत होते न देख बच्चनजी व्यंग्योक्ति प्रहार करते हैं–

> हमें होता है अभिमान । पर अजीब–सी लगती है बात
> कि बूढे भारतपर बीसवीं सदी का व्यंग्य।
> कि जहां हुए वशिष्ट और व्यास।
> उनके प्रतिनिधि है आज रंजीत, ड्यूलिप और मनकाड।[20]

उनकी 'दो चट्टाने' 'बुद्ध और नाचघर' की रचनाओंमें इस भावना के अनुपम चित्र मिलते हैं।

jk"Vª/ot dk Ápfr vknj & राजनीतिक अधिकार स्वतंत्रता एवं संस्कृति को सूचित करनेवाली 'गणतंत्र–पताका'[21] के प्रति कवि अपनी शुभ भावना को व्यक्त करते हुए उसकी महिमा को बखानते हैं। न साम दाम के समक्ष यह रुकी, न दंड भेद के समक्ष झुकी। सगर्व आज शत्रु–शीष पर ठुकी, निडर ध्वजा। हरी, सफेद, केसरी।[22] राष्ट्रध्वज के प्रति झंडागीत में सकारण परिवर्तन करके अपने कवि कर्म को निभाना वे नहीं भूले।

jktuhfrd O;X;&

'बच्चन' जी जब राज्यसभा के मनोनीत सदस्य बने उन्होंने नेताओं की अवसरवादिता, स्वार्थपरता, सत्तालोलुपता को नजदीक से देखा। इसमें वर्तमान राजनीतिज्ञ जो योजनारुपी चिक की ओट शिकार करते हैं उनके व्यंग्य का निशाना बने–'परिवार नियोजन'[23] कीमतें और कीमतें[24] दिल्ली की मुसीबत'[25] नई दिल्ली किसकी है ?[26] 'खजूर' आदि कविताओं में उनकी राष्ट्रीय भावना व्यंगात्मक रूप में प्रस्तुत है।

Á;k.k xhr %

भारतीय सैनिकों को आव्हान करते हुए कवि कहते हैं कि 'वीरत्व–विवेक'[27] के साथ अपने सीने को गर्व से तानकर प्रयाण करो। 'भारतीय सैनिकों का 'समर–प्रयाण' तथा 'त्रिभंगिमा' में थलसेना का 'प्रयाणगीत' ओज युक्त है। कवि कहते हैं–

> tx dk iFk ij t¨ u #dxk
> t¨ u >qdxk t¨ u eqMxk]
> mldk thou] mldh thrA[28]

नौ–सैनिकों के 'प्रयाण गीत' में वे हँसते गाते, दिशाओं को गुंजाते हुए प्रयाण करने के लिए कहते हैं।

mi lagkj %¼**Conclusion**½

इस प्रकार बच्चनजी की राष्ट्रीयभावना विभिन्न आयामों में अभियुक्त हुई है। प्रो.कृष्णचंद्र पंड्या के शब्दों में कवि सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, नैतिक आदि सभी क्षेत्रों की राष्ट्रीय समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया है और जितनी विविध समस्याओं पर बच्चन ने लेखनी उठाई है, स्वाधीनता के बाद कुछ ही कवि उनके समानान्तर चल सके हैं।[29]

'मधुकाव्य' से प्रसिद्धि पानेवाले कवि बच्चन के साथ 'हालावाद' का फतवा इस कदर जुड गया है, कि उनका राष्ट्रीयता से संबंधित काव्य अलक्षित–सा रह गया है। 'मधुशाला' 'मधुबाला' मधुकलश में अंकित उनके राष्ट्रीयता के चित्र अलक्षित कर केवल रुमानियत को ही सराहा गया। उनकी मधुशाला की ये पंक्तियॉं–'बैर बढाते मस्जिद मंदिर मेल कराती मधुशाला' राष्ट्रीयता का ही प्रतीक है।

lq>ko %¼**Suggestion**½

आज आवश्यकता इस बात की है कि काव्यप्रेमी उनके काव्य में राष्ट्रीयता की पुकार, राष्ट्र के प्रति उनकी भावना कर्तव्य तथा राष्ट्रीय विचारों को समझने का प्रयास करें और उनके साहित्य का सही मूल्यांकन करे । यह लघुशोध इसी दिशा में एक प्रयास हैं।